

३. सेल्फी का शौक

- अनिल कुमार जैन

परिचय

परिचय : आपके लेख, कविताएँ, रिपोर्ट आदि स्थानीय व राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। आप संप्रति केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर में अनुभाग अधिकारी हैं।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत निबंध में लेखक अनिल कुमार जैन जी ने मोबाइल फोटोग्राफी और सेल्फी के चलन पर अपनी लेखनी चलाई है। सेल्फी की दीवानगी में अनगिनत लोगों को अपनी जान भी गँवानी पड़ी है। आपका मानना है कि हमें सावधानी से वैज्ञानिक साधनों का उपयोग करना चाहिए।

मौलिक सृजन

‘स्वच्छता अभियान में हमारा योगदान’ पर अपने विचार लिखो।

पहले मोबाइल आया। फिर स्मार्ट और एंड्रायड फोन आए और अब उसी से जुड़ा एक और फीचर चला है—सेल्फी। धीरे-धीरे इन चीजों ने पूरे तंत्र को जकड़ लिया है। आज ये चीजें लोगों की जरूरत बन गई हैं। मोबाइल फोटोग्राफी का क्रेज इतना है कि चार-पाँच दोस्त एकत्र हुए नहीं कि फोटोग्राफी शुरू हो जाती है। यह शौक फोटोग्राफी तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि उसके बाद सोशल मीडिया पर इन फोटोज को शेयर करना भी एक आदत हो गई है। इतना ही नहीं, यदि कहीं कोई घटना घटती है तो मीडिया बाद में पहुँचता है। तथाकथित मोबाइल फोटोग्राफर उसे कवर कर सोशल साइट्स—फेसबुक, ट्विटर, वॉट्सअप आदि पर तुरंत अपलोड कर देते हैं। सामाजिक चेतना का यह एक नया स्वरूप है। मोबाइल आज पत्रकारिता का हिस्सा बन गया है। इसके बढ़ते उपयोग का सबसे बड़ा कारण सभी के पास मोबाइल सहज उपलब्ध होना है। इसके अलावा इसका उपयोग भी आसान है। कह सकते हैं कि मोबाइल फोटोग्राफी ने कम समय में कई गुना तरक्की की है।

आज मोबाइल फोटोग्राफी क्षेत्र में ‘मोबाइल फोटोग्राफी अवार्ड’ भी दिए जा रहे हैं। इन पुरस्कारों की शुरुआत डेनियल बर्मन ने सन २०११ में की। इस प्रतियोगिता का विश्व की सबसे बड़ी प्रतियोगिताओं में शुमार है। मोबाइल कंपनियाँ भी इस शौक को आगे बढ़ाने में पीछे नहीं हैं। रोज नये-नये मोबाइल लॉन्च कर रही हैं। नये फीचर जोड़ रही हैं। मेगा पिक्सल बढ़ा रही हैं। विभिन्न प्रकार के एप्स निकाल रही हैं।

सेल्फी शब्द की शुरुआत २००२ से हुई। मोबाइल फोन के फ्रंट कैमरे से अपनी खुद की या अपने समूह की फोटो लेना ही सेल्फी है। बीते दिनों में इसका क्रेज दीवानगी की हद तक आ गया है।

वर्ष २०१३ में तो इसने अपने कीर्तिमान के झंडे गाड़ दिए। इसे ‘ऑक्सफोर्ड वर्ड ऑफ द ईयर’ के खिताब से नवाजा गया। इसे ‘ऑनलाइन ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी’ में भी शामिल कर लिया गया है। इसे फ्रेंच डिक्शनरी ‘ले पेटिट लराउसे’ में भी शामिल किया गया है। इसके अलावा अगस्त २०१४ में इसे स्क्रैबल खेल के लिए भी स्वीकार कर लिया गया। एक फिल्म में ‘सेल्फी ले ले’ शब्दों से एक गाना भी

बन गया है। ये सब निश्चय ही शब्द की महत्ता और लोकप्रियता को जाहिर करते हैं।

सेल्फी के साथ ही एक और शब्द चलन में आया है, वह है-ग्रुपी। जी हाँ, सेल्फी की तरह ही जब समूह की फोटो ली जाती है तो उसे 'ग्रुपी' पुकारा गया। इसका भी क्रेज हदों के पार है।

सेल्फी की दीवानगी दुनिया भर में है। नेता हो या अभिनेता या फिर कोई अन्य, हर किसी को सेल्फी का चस्का लग गया है। युवक-युवतियों में तो यह दीवानगी की हदों के पार है। अलग-अलग स्टाइल में अपनी सेल्फी लेने के चक्कर में युवक-युवतियाँ न जाने क्या-क्या कर रहे हैं।

सेल्फी के इस जुनून में कई बार ऐसी घटनाएँ भी हुई हैं कि लोगों को अपनी जान तक गँवानी पड़ी। लंदन में रोमानियाई किशोरी अन्ना उर्सु ट्रेन के ऊपर से जा रही २७ हजार वॉल्ट की टेंशन लाइन टच करते ही वहीं ढेर हो गई। एक लड़के ने तो अपने मृत चाचा जी के साथ सेल्फी ली।

बीते दिनों सेल्फी पर एक चुटकी पढ़ने को मिली-‘यमदूत तुम मुझे अपने साथ ले जाओ, इससे पहले एक सेल्फी प्लीज...!’, है न कितना अजीब शौक ! ब्रिटिश वेबसाइट फीलिंग यूनिक्स डॉट कॉम के एक सर्वे की बात करें तो लड़कियाँ एक सप्ताह में करीब पाँच घंटे सेल्फी पूरी कर रही हैं और हर १० में से एक लड़की के पास कार या अपने ऑफिस की करीब १५० सेल्फी रहती है। मैंने जब एक लड़की से पूछा कि ‘मर्जी आए वहीं सेल्फी क्यों?’ तो जवाब मिला, “कहीं पर भी जाओ, एक सेल्फी तो बनती है।”

इन बातों से अंदाजा लगा सकते हैं कि सेल्फी का कितना क्रेज है। लोगों के इस शौक को यदि सेल्फी का कीड़ा कहें तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

सेल्फी एक शौक तो है ही किंतु लोग इसे कूटनीति का एक माध्यम मान रहे हैं। सेल्फी के माध्यम से रिश्ते को प्रगाढ़ता दी जा रही है। एक-दूसरे से घनिष्ठता दिखाई जा रही है। हरियाणा के जींद की बीबीपुर ग्राम पंचायत ने एक अनूठी पहल की है। उन्होंने बेटियों के साथ ‘सेल्फी लो और इनाम पाओ’ प्रतियोगिता आरंभ की है। बेटियों की कमी से जूझ रहे समाज में बेटियों के महत्त्व को जताते हुए सेल्फी का एक अभिनव प्रयोग किया है।

यह चस्का हर सेलिब्रेटी, नेता, वी.आई.पी आदि सभी को है। लोग स्वयं अपनी गतिविधियों और आस-पास की घटनाओं का



संभाषणीय

‘भारत में सघन वन किन स्थानों पर बचे हैं’, इसपर आपस में चर्चा करो।



श्रवणीय



प्रसार माध्यमों से किसी प्रसंग/घटना संबंधी राष्ट्रीय समाचार सुनो और उसमें प्रयुक्त भाषा की विशेषताएँ समझने का प्रयास करो।



पठनीय

महादेवी वर्मा जी लिखित 'मेरा परिवार' से कोई एक रेखाचित्र पढ़ो।

कवरेज कर सोशल साइट्स पर अपलोड कर रहे हैं अर्थात् जाने-अनजाने मोबाइल फोटोग्राफी से मीडिया का काम बरबस हो ही रहा है।

मोबाइल फोटोग्राफी न सिर्फ फोटो पत्रकारिता का काम कर रही है अपितु घटनाओं का कवरेज कर न्यूज भी प्रसारित कर रही है। इससे खबरें शीघ्र आने लगी हैं। लाइव कवरेज जैसा प्रसारण हो गया है। कह सकते हैं कि यह मीडिया का एक सशक्त माध्यम है। मोबाइल ने हर आदमी को पत्रकार बना दिया है। उसकी सामाजिक चेतना को जगा दिया है। घटना-घटते ही हर कोई फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी कर देश भर में खबर को फैला देता है।

सेल्फी का सबसे बड़ा फायदा इसकी बड़ी बहन 'ग्रुपी' से है। पहले एक आदमी को ग्रुप से बाहर रहकर फोटो खींचनी पड़ती थी। अब सेल्फी की बड़ी बहन यानी ग्रुपी के आने से अब पूरे समूह की फोटो लेना आसान हो गया है। किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। इसमें बैकग्राउंड को कवर करना भी आसान हो गया है। एक-दूजे के साथ सेल्फी लेकर लोग एक-दूजे के करीब आ रहे हैं। घनिष्ठता जाहिर करने का यह तरीका बन गया है। डिजिटल एस.एल.आर कैमरों से भी मुक्ति मिली है। सेल्फी आने से किशोर-किशोरियों में सजने-सँवरने का शौक बढ़ा है। आईने से भी इन्हें मुक्ति मिली है क्योंकि अब वे सेल्फी में ही अपने-आपको निहार लेते हैं। इसके अलावा भी छोटे-बड़े कई फायदे हैं।

स्मार्ट फोन का आज एक पूरा बाजार है। नये-नये फीचर से जुड़ी पूरी एक रेंज है। एप्स, टूल्स व एक्सेसरीज की भी भरमार है। फोन में कैमरों की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। फ्रंट और बैक कैमरों में अच्छे मेगा पिक्सल के कैमरे आने लगे हैं। सेल्फी के लिए छड़ी आने लगी है जो कि बड़े समूह को कवर करने के लिए एक अच्छा साधन है। अमेरिका में तो सेल्फी यानी सेल्फ पोर्ट्रेट के लिए पाठ्यक्रम भी चला दिया है। इसमें अलग-अलग कोणों से ली हुई तस्वीरों व उनके हाव-भाव, बैकग्राउंड आदि का विश्लेषण व तुलनात्मक अध्ययन आदि शामिल है।

मोबाइल फोटोग्राफी के कुछ फायदे हैं तो कुछ नुकसान भी हैं। कुछ फोटोग्राफ्स जो प्रसारित नहीं होने चाहिए, वे भी प्रसारित हो जाते हैं। कुछ संपादन या काट-छाँट के पश्चात प्रसारित होने चाहिए, वे भी बिना संपादन के प्रसारित हो जाते हैं। अतः ऐसे तथाकथित मोबाइल फोटो पत्रकारों को संवेदनशील मामलों के फोटो प्रसारित करने में

सावधानी बरतनी चाहिए ।

इसके अलावा मोबाइल फोटोग्राफी करते समय ध्यान रखें कि किसी की निजता भंग न हो । किसी का दिल न दुखे । संकट में आए व्यक्ति की फोटोग्राफी करने से पहले उसकी मदद के लिए हाथ बढ़ाएँ । फोटोग्राफी और सेल्फी के चक्कर में ज्यादा रिस्क न लें अन्यथा यह जान को भारी पड़ सकती है । एप्स का उपयोग सकारात्मक करें । किसी की फोटो से छेड़छाड़ करने से बचें । फोटो का उपयोग अच्छे कार्य के लिए करें । इन बातों में यदि जरा भी लापरवाही की तो परिणाम घातक ही होंगे । अतः इन सावधानियों का कड़ाई से पालन करना चाहिए ।

मोबाइल फोटोग्राफी की इस चर्चा से जाहिर है कि यह दशक मोबाइल फोटोग्राफी और सेल्फी का है । मीडिया का यह सशक्त माध्यम है । इससे सामाजिक चेतना में एक नया संचार हुआ है । शौक से शुरू हुआ यह सफर आज पत्रकारिता और डिप्लोमेसी का हिस्सा बन गया है । यह चस्का बड़े शहरों से छोटे शहरों और छोटे शहरों से गाँव-ढाणी तक पहुँच गया है, जो फिलहाल रुकने वाला नहीं है ।

— ० —

लेखनीय



‘मोबाइल से लाभ-हानि’ विषय पर अपने विचार लिखो ।

शब्द वाटिका

सीमित = मर्यादित, नियंत्रित

शुमार = शामिल

नवाजना = कृपा करना, सम्मानित करना

दीवानगी = पागलपन, नशा

कूटनीति = पारस्परिक व्यवहार में दाँव-पेंच की नीति या छिपी हुई चाल ।

अतिशयोक्ति = बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कही हुई बात

बरबस = सहज

प्रगाढ़ = बहुत गहरा

अनूठी = अनोखी, अद्भुत

मुहावरा

ढेर हो जाना = मृत्यु हो जाना

* सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-

(१) तालिका पूर्ण करो :

मोबाइल पर फोटोग्राफी करते समय आवश्यक सावधानियाँ :

(२) कृति पूर्ण करो :

१. सेल्फी के चक्कर में हुई दुर्घटनाएँ

२. सेल्फी से फायदे

(३) एक वाक्य में उत्तर लिखो :

१. मोबाइल का उपयोग क्यों बढ़ रहा है ? -----
२. 'सेल्फी' को किस खिताब से नवाजा गया है ? -----
३. सेल्फ पोर्ट्रेट के पाठ्यक्रम में क्या किया जाता है ? -----
४. लेखक ने कौन-सा अजीब शौक बताया है ? -----

(४) पाठ में आए अंग्रेजी शब्दों के अर्थ हिंदी में लिखो :

सदैव ध्यान में रखो

'विज्ञान मानव की सहायता के लिए है ।'



भाषा बिंदु

पाठ में प्रयुक्त सहायक क्रिया के वाक्य ढूँढ़कर लिखो । मुख्य और सहायक क्रियाएँ अलग करके लिखो ।

उपयोजित लेखन

निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर उसपर आधारित ऐसे पाँच प्रश्न तैयार करके लिखो जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों :

एकता का सबसे सुंदर उदाहरण पेश करने वाले पक्षी हैं कौए । एक कौआ अगर किसी कारणवश मर जाए तो अनेक कौए इकट्ठे होकर काँव-काँव करने लगते हैं, मानो मृत्यु के कारणों पर विचार-विनिमय कर रहे हैं । इसी प्रकार यदि कोई कौआ अन्य कौओं की दृष्टि से कोई अनुचित काम करता है, तो कौओं की सभा में सर्वसम्मति से निर्णय लिया जाता है और दोषी कौए को समुचित दंड दिया जाता है । कौआ चालाक और चतुर तो है किंतु कोयल से ज्यादा नहीं । कौआ जब आहार की तलाश में बाहर निकल जाता है तो कोयल चुपके से कौए के घोंसले में अपने अंडे रखकर उड़ जाती है । यदि उस समय कोयल को कौआ देख ले तो फिर कोयल की खैर नहीं । कौआ चोंच मार-मारकर कोयल को घायल कर देता है । ऐसे में कोयल की चतुराई काम नहीं आती और उसे प्राणों से हाथ धोना पड़ता है । वैसे तो कौआ पालने की हमारे यहाँ कोई प्रथा नहीं है किंतु इस पक्षी की उपयोगिता है । फसलों को नष्ट करने वाले कीड़े-मकोड़ों को खाकर ये किसानों की सेवा करते हैं । इतना ही नहीं, पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में भी इन कीटभक्षी पक्षियों की अहम भूमिका होती है ।

(सीताराम सिंह 'पंकज')

१. _____
२. _____
३. _____
४. _____
५. _____



स्वयं अध्ययन

शालेय पर्यटन के लिए आवश्यक सूचनापत्र बनाओ ।